Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

हिन्दी वर्णमाला के उद्भव में पाणिनीय प्रभाव

डॉ लेखराम दन्नाना
सहायक आचार्य , संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info

Volume 7, Issue 1
Page Number : 51-57

Publication Issue :
January-February-2024

Article History
Accepted : 25 Jan 2024
Published : 15 Feb 2024

अभिसंक्षिप्तिका :- समाज, संस्कृति एवं साहित्य की परिपोषक जो भाषाएँ हैं, भारत उन भाषाओं का भण्डार है। भारत में अनेक भाषाएँ हैं, जिनको हम भारतीय भाषा की संज्ञा देते हैं, अत: भारत एक बहुभाषी देश है । पाश्चात्य विद्वानों ने इसे भाषा परीक्षण की प्रयोगशाला तक कहा है । जहाँ उत्तर की ओर हिन्दी, उर्दु, पंजाबी, कश्मीरी इत्यादि भाषाओं का प्रयोग होता है , वहीं दक्षिण की ओर द्रविड़ परिवार की तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम आदि भाषाओं का प्रयोग होता है । ऐसे ही पश्चिम पूर्व और मध्य देश में विभिन्न भाषाओं एवं विभाषाओं का प्रयोग दिखाई देता है । जैसे- गुजराती, मराठी, बंगला, असमिया, उडिया, मणिपुरी इत्यादि। भारत जो भाषा प्रयोगशाला के रूप में जाना जाता है, उस भाषा प्रयोगशाला का आधार संस्कृत भाषा है । संस्कृत भाषा एक विशिष्ट भाषा है, जिसने भारत को स्वर्णिम चिड़िया की संज्ञा दिलायी है । जिसने संस्कृति को जीवित रखा है, जिसने साहित्य को मूर्धन्य स्थान दिया है, साहित्य को उस शिखर तक पहुँचाया है जिस शिखर से सभी ज्ञान अर्जित कर लाभान्वित हो रहे हैं । संस्कृत का व्याकरणिक पक्ष सुदृढ़ है जिससे अन्य भाषाओं के व्याकरण को भी सुदृढ़ता मिलती है । संस्कृत व्याकरण से प्राय: प्रत्येक भारतीय एवं वैदेशिक भाषाएं प्रभावित हुई हैं । भारतीय भाषाओं में हिंदी के ऊपर विशेष रूप से प्रभाव परिलक्षित होता है । हिंदी के प्रत्येक व्याकरणिक तत्त्व पर पाणिनीय व्याकरण का प्रभाव दिखाई पड़ता है । पाणिनीय व्याकरण का हिंदी वर्णमाला पर जो विशिष्ट प्रभाव है, वह इस आलेख में प्रस्तुत है ।

संकेत शब्द : व्याकरण, सूत्र, वर्णमाला, स्थान, प्रयत्न, मात्रा ।

संस्कृत एक प्राचीनतम अनुशासित एवं परिपक्व भाषा है । यह सर्वविदित है कि संस्कृत विश्व के अनेक भाषाओं की जननी है । संस्कृत भाषा में अनेक शास्त्रों का समावेश है जिनसे संस्कृत भाषा एवं संस्कृत वाङ्मय प्रपूरित होता है । दर्शन, साहित्य, ज्योतिष, अलंकार, धर्म, नाट्य, तथा व्याकरण आदि अनेक शास्त्र विद्यमान हैं । विद्यमान शास्त्रों की श्रृङ्खला में व्याकरण शास्त्र का विशिष्ट स्थान है । "**मुखं व्याकरणं स्मृतम्**" महाभाष्यकार पतञ्जलि के उपर्युक्त कथनानुसार व्याकरण को शास्त्रों का मुख रूप कहा जाता है । व्याकरण जिससे शब्दों की व्युत्पत्ति जानी जा सके, शब्दों की प्रकृति, धातु, प्रत्यय आदि विश्लेषण

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

जाना जा सके एवं शब्दों का सुचारु रूप से प्रयोग जाना जा सके । अतः **व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा अनेन इति व्याकरणम्** इस प्रकार की परिभाषा वैयाकरणों ने परिभाषित की है।

संस्कृत व्याकरण के बहुत सारे वैयाकरणों ने अपने अपने व्याकरण ग्रन्थ रचे हैं, परन्तु उनमें सबसे ज्यादा प्रसिद्धि प्राप्त व्याकरण ग्रन्थ पाणिनि कृत अष्टाध्यायी है । यह एक विशिष्ट शैली में रचा हुआ व्याकरण ग्रन्थ है, जिससे संस्कृत व्याकरण सम्यक् रूप से अनुशासित होते हुए परिपक्वता को प्राप्त हुआ है । अष्टाध्यायी ग्रन्थ में कुल आठ 8 अध्याय हैं जो कि इसके नाम से ही स्पष्ट ज्ञात होता है । प्रत्येक अध्यायों में चार-चार पाद हैं और सम्पूर्ण अध्यायों में लगभग 3995 सूत्र हैं । इन सूत्रों में सम्पूर्ण संस्कृत भाषा को सुगमता से माला में फूलों के सदृश पिरो दिया है एवं वैज्ञानिक शैली, सांस्कृतिक शैली, प्रोग्रामिक शैली इस ग्रन्थ में झलकती है ।

संस्कृत में सूत्र ग्रन्थों का विस्तृत रूप रहा है । सूत्र अर्थात् संक्षिप्तता से समग्र विषय का कथन । सूत्र की परिभाषा एक श्लोकानुसार -

अल्पाक्षरमसंदिग्धं सारवद् विश्वतो मुखम् ।

अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः ।।

सूत्र किसे कहते हैं? सूत्र की वस्तुनिष्ठता के लिए क्या - क्या आवश्यक हैं ?यह इस श्लोक में कथित है, जैसे -

- अल्पाक्षरम् - अल्प अक्षरों में निर्मित
- असन्दिग्धम् - सन्देह रहित
- सारवत् - निष्कृष्ट अर्थ का प्रकाशक
- विश्वतोमुखम् - अनुवृत्ति अपकर्षादि द्वारा पूर्व और पर से संगतार्थ का द्योतक ।
- अस्तोभम् - अवरोध रहित । अपने सम्पूर्ण लक्ष्यस्थल में व्यापक ।
- अनवद्यम् - दोष रहित, (अव्याप्ति, अतिव्याप्ति, असम्भवादि त्रिदोषों से रहित)

अर्थात् जो अल्पाक्षरों में निर्मित है, सन्देह रहित है, निष्कृष्ट अर्थ का प्रकाशक है, अनुवृत्ति अपकर्षादिद्वारा पूर्व और पर के संगतार्थ का द्योतक है, अवरोध रहित है- अर्थात् अपने सम्पूर्ण लक्ष्य स्थल में व्यापक है, त्रिदोष - अव्याप्ति, अतिव्याप्ति, असम्भवादि दोषों से रहित है वह सूत्र है । सूत्र की परिभाषा वाचस्पति मिश्र जी ने भामती टीका में इस प्रकार की है -

लघूनि सूचितार्थानि स्वल्पाक्षरपदानि च ।

सर्वतः सारभूतानि सूत्राण्याहुर्मनीषिणः ।।

अर्थात् जो लघु होते हैं, अर्थ को सूचित करने वाले होते हैं, स्वल्पाक्षर एवं स्वल्प पदों वाले होते हैं, सारभूत होते हैं उनको मनीषी गण सूत्र कहते हैं । वार्तिककार कात्यायन ने भी सूत्र की परिभाषा देते हुए लिखा है -

अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद् गूढनिर्णयम् ।

निर्दोषं हेतुमत् तथ्यं सूत्रमित्युच्यते बुधैः ।।

अल्पाक्षर हो, असन्दिग्ध हो, सारवत् हो, गूढ निर्णय करने वाला हो, निर्दोष हो, हेतुमत् हो वह सूत्र कहलाता है ।

इस सूत्र संज्ञा से सम्बोधित तथ्य को पाणिनि के व्याकरण में छ: प्रकार से देखा जा सकता है –

संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च ।

अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम् ।।

अर्थात् सूत्र छ: प्रकार के होते हैं – संज्ञा सूत्र. परिभाषा सूत्र, विधि सूत्र, नियम सूत्र, अतिदेश सूत्र, एवं अधिकार सूत्र ।

- ❖ संज्ञा सूत्र – संज्ञा और संज्ञी का बोध कराने वाले सूत्र संज्ञा सूत्र हैं, जैसे – **अदेङ् गुण:**, यहाँ अदेङ् संज्ञी गुण: संज्ञा ।
- ❖ परिभाषा सूत्र – अनियमावस्था में नियम स्थापन करने वाला परिभाषा सूत्र कहलाता है , जैसे – **षष्ठी स्थानेयोगा** ।
- ❖ विधि सूत्र – कार्यादि विधान करने वाला विधि सूत्र है, जैसे – **इको यणचि** ।
- ❖ नियम सूत्र – प्राप्त विधि का नियमन करने वाला नियम सूत्र होता है, जैसे – **रात्सस्य** ।
- ❖ अतिदेश सूत्र – अन्य धर्म को अन्यत्र आरोपित करना अतिदेश है, जैसे – **स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ** ।
- ❖ अधिकार सूत्र – उत्तरोत्तर गमन करने वाला अधिकार सूत्र कहलाता है, जैसे – **कारके, धातो**: इत्यादि । इन छ: प्रकार के सूत्रों को अच्छी प्रकार जान लेने से व्याकरण सुगमता से समझा जा सकता है । प्रत्येक सूत्र को जानने की विधि कुछ इस प्रकार है –

पदच्छेद: पदार्थोक्ति: विग्रहो वाक्ययोजना ।

आक्षेपोऽथ समाधानं व्याख्यानं षड्विधं मतम् ।।

सूत्र की व्याख्या या सूत्र के समझने के लिए ये छ: लक्षण क्रमश: अत्यन्त आवश्यक हैं।

- पदच्छेद – अर्थात् पदविभाग ।
- पदार्थोक्ति – अर्थात् विभक्ति का ज्ञान तथा पदों का अर्थ विश्लेषण ।
- विग्रह – सूत्र में प्रयुक्त समस्त पदों का विश्लेषण । व्युत्पत्ति लभ्य अर्थ को ज्ञापन करने के लिए विग्रह कथन ।
- वाक्ययोजना – अर्थात् अधिकार अनुवृत्ति आदि से पदों को जोडकर अर्थ सिद्ध करना ।
- आक्षेप – अर्थात् पूर्वपक्ष तथा सूत्र में विद्यमान शङ्का ।
- समाधान – उत्तरपक्ष तथा प्रश्न का उत्तर ।

इस प्रक्रिया से पूर्व शुद्ध शब्दों के उच्चारण के लिए पाणिनि ने पाणिनीय शिक्षा का निर्माण किया । जिसको आधार मानकर ही हिन्दी व्याकरण का जन्म हुआ है और उसकी प्रोन्नति भी पाणिनीय प्रणाली के आधार पर ही देखी जा सकती है ।

हिंदी एक सरल एवं सुगम भाषा है । आजकल भारत ही नहीं अपितु विदेशों में भी हिंदी भाषा का अध्ययन किया जाता है । हिंदी भाषा अन्य भाषाओं से शब्दों को सरलता से ग्रहण कर लेती है । यह शब्द ग्राह्यता ही हिंदी के सौंदर्य को वर्धित करता है । हिंदी भाषा का साहित्य पक्ष तो अत्यंत समृद्ध है ही व्याकरण पक्ष भी सुदृढ़ है । व्याकरण पक्ष सुदृढ़ होने कारण है उसके आधारभूमि के रूप में संस्कृत व्याकरण का होना ।

हिन्दी-व्याकरण के अनुसार वर्णमाला की परिभाषा- किसी भाषा के समस्त वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं । हिन्दी-व्याकरण के अध्ययन के लिये हिन्दी की मानक वर्णमाला का ज्ञान प्राथमिक है, जो कि सबसे अधिक प्रचलित और प्राचीन वर्गीकृत स्वर एवं व्यञ्जन में मिलता है ।

स्वर – स्वर उन ध्वनियों को कहते हैं जो कि स्वयं उच्चरित होते हैं । तद्यथा **स्वयं राजन्ते इति स्वरा:**[i] इति ।

व्यञ्जन – व्यञ्जन उन ध्वनियों को कहते हैं जो स्वरों की सहायता से उच्चरित होते हैं । तद्यथा **अन्वग्भवति व्यञ्जनम्**[ii] इति ।

वर्णमाला- हिन्दी की वर्णमाला के अन्तर्गत 13 स्वर एवं 33 व्यञ्जन हैं, इसके अतिरिक्त अनुस्वार, विसर्ग और चन्द्रबिन्दु ये कुल मिलाकर 49 वर्णसमूह मिलता है ।

संस्कृत-वर्णमाला के अन्तर्गत **त्रिषष्टि वर्णा:**[iii] कुल 63 वर्ण वर्णोच्चारणशिक्षा में निर्दिष्ट हैं ।

हिन्दी में व्यञ्जन-समूह के लिये कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, पवर्ग आदि व्यवहार होता है, संस्कृत-व्याकरण में कु, चु, टु, तु, पु का व्यवहार प्रसिद्ध है । इन कु, चु, टु, तु का ही विकृत रूप है कवर्ग, चवर्गादि । जैसे कि पाणिनि ने – **कुहोश्चु:**[iv], **चुटू**[v], **चो: कु:**[vi], **ष्टुना ष्टु:**[vii] आदि प्रयोग करके **अणुदित् सवर्णस्य चाप्रत्यय:**[viii] इस सूत्र के द्वारा उदित् निर्देश से उनके सवर्णी का ग्रहण बताया है । सवर्णी का तात्पर्य है समान वर्णों का समूह , जैसे कि क, ख, ग, घ, ङ इन वर्णों में समानता देखे जाने से कु इतना मात्र उच्चारण से वह पाँच वर्णों का वर्ण समूह जाना जाता है, जिसे कि हिन्दी में वर्ग कहा जाता है अत: कवर्ग चवर्गादि व्यवहार हिन्दी में प्रसिद्ध है ।

उच्चारण स्थान के आधार पर- वर्ण का उच्चारण करते समय , श्वास वायु मुख के जिस अवयव से टकराती है, उसे वर्ण का उच्चारण स्थान कहते हैं । जैसे- कण्ठ्य, तालु, मूर्धा, ओष्ठ्य, दन्त, नासिका । इन वर्ग समूह का जो स्थान निर्देश हिन्दी व्याकरण में है वो पाणिनि के संस्कृत-व्याकरण में भी लगभग समान ही मिलता है । स्थान – निर्देश करते हुए पाणिनि का वचन है –

अष्टौ स्थानानि वर्णानामुर: कण्ठ: शिरस्तथा ।

जिह्वामूलश्च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च[ix] ।।

1. **कण्ठ्य -** कण्ठ से उच्चरित ध्वनियों को कण्ठ्य ध्वनियाँ कहते हैं, जैसे – क, ख, ग, घ, ङ और विसर्ग तथा अ, आ स्वर भी कण्ठ्य हैं । ह के उच्चारण के लिये हिन्दी-व्याकरण के अन्तर्गत काकल्य ध्वनि स्थान का निर्देश है किन्तु संस्कृत-व्याकरण में तो ह को भी कण्ठ्य ही माना गया है, जैसे- **अकुहविसर्जनीया: कण्ठ्या: –** पाणिनिशिक्षा ।
2. **तालव्य -** जिस ध्वनि का उच्चारण तालु से किया जाता है, जैसे- च, छ, ज, झ, ञ, य, श तथा इ, ई। तत्सम संस्कृत-व्याकरण में **इचुयशानां तालु** – पाणिनीयशिक्षा ।
3. **मूर्धन्य** – जिन ध्वनियों का उच्चारण मूर्धा की सहायता से किया जाता है, इसमें टवर्ग तथा र, ष ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं । संस्कृत-व्याकरण में पाणिनिशिक्षा का सूत्र है – **ऋटुरषाणां मूर्धा**[x] ।

4. **दन्त** - दाँत की सहायता से उच्चरित ध्वनियाँ दन्त्य हैं, इसमें जिह्वाग्र या जीभ के नोंक की सहायता ली जाती है । हिन्दी के त, थ, द, ध दन्त्य हैं । न एवं ल को **वर्त्स्य** कहा है । वर्त्स्य मतलब मसूडे की सहायता से उत्पन्न जो ध्वनि । ल को हिन्दी-व्याकरण के अन्तर्गत **पार्श्विक व्यञ्जन** भी कहा जाता है । संस्कृत में न और ल दोनों वर्णों को दन्त्य वर्ण के अन्तर्गत ही अन्तर्भूत कर लिया जाता है, सूत्र है- **लृतुलसानां दन्त्याः** ।
5. **दन्तोष्ठ्य** - जिनका उच्चारण ऊपर के दाँत और नीचे के होंठ की सहायता से होता है । हिन्दी-व्याकरण के अन्तर्गत व एवं फ दन्तोष्ठ्य वर्ण हैं, किन्तु संस्कृत-व्याकरण में केवल वकार को दन्तोष्ठ्य माना है, इसमें फ को भी ओष्ठ्य ही माना है, जैसे कि पाणिनीयशिक्षा का सूत्र है - **वकारो दन्त्योष्ठौ**[xi] ।
6. **ओष्ठ्य** - जिनका उच्चारण दोनों होठों से हो, जैसे- प, फ, ब, भ, म इन्हें ओष्ठ्य कहते हैं । पाणिनीयशिक्षा में कहा है- **उपूपध्मानीयानां ओष्ठ्याः** ।
7. **कण्ठोष्ठ्य** - कण्ठ से जीभ और होठों के कुछ स्पर्श से बोली जाने वाली ध्वनि जैसे - ओ एवं औ । इसी को पाणिनि कहते हैं - **ओदौतौ कण्ठ्योष्ठौ**[xii] ।
8. **कण्ठतालु** - कण्ठ से जीभ और तालु के कुछ स्पर्श से बोली जाने वाली ध्वनि जैसे- ए एवं ऐ । इसी को पाणिनि कहते हैं - **एदैतौ कण्ठ्यतालु**[xiii] ।
9. **जिह्वामूलीय** - जिन ध्वनियों का उच्चारण जिह्वा के मूल या अन्तिम भाग से किया जाता है वे जिह्वामूलीय ध्वनियाँ हैं, इनका प्रयोग हिन्दी में नहीं देखा जाता है किन्तु संस्कृत-व्याकरण में इनका प्रयोग होता है ।
10. **अनुनासिक** - जिन ध्वनियों का उच्चारण नासिका मार्ग से किया जाता है । उन ध्वनियों को अनुनासिक कहा जाता है । अनुनासिक का चिह्न (ँ)चन्द्र बिन्दु है । अनुनासिक व्यञ्जन होता है । प्रत्येक वर्ग का पञ्चम वर्ण ङ, ञ, ण, न, म । इसी को पाणिनीयशिक्षा में पाणिनि कहते हैं- **ङञणनमाः स्वस्थान-नासिकास्थानाः**[xiv] ।

संयुक्त वर्ण - क्ष, त्र, ज्ञ आदि जैसे हिन्दी वर्णमाला के अन्तर्गत देखे जाते हैं, वैसे संस्कृत-व्याकरण में भी इनका प्रयोग होता है ।

मात्रा - किसी भी स्वर के उच्चारण में लगने वाले समय की नाप को मात्रा कहते हैं । जिसे संस्कृत-व्याकरण में काल या मात्रा पद से सम्बोधित किया जाता है जैसे- एकमात्रिक, द्विमात्रिक, त्रिमात्रिक । हिन्दी में एकमात्रिक, द्विमात्रिक, त्रिमात्रिक के लिये जैसे ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत का प्रयोग होता है ठीक उसी तरह संस्कृत में भी ये प्रयोग किये जाते हैं । तद्यथा-

एकमात्रो भवेत् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते ।

त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयः व्यञ्जनं चार्धमात्रकम्[xv] ।।

अष्टाध्यायी में इसके लिये सूत्र लिखा है पाणिनि ने- **ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः**[xvi](1-2-27) । इस सूत्र से संस्कृत-व्याकरण में एकमात्रिक की ह्रस्व, द्विमात्रिक की दीर्घ, त्रिमात्रिक की प्लुतसंज्ञा प्रसिद्ध है।

ह्रस्वार्ध - हिन्दी व्याकरण के अन्तर्गत ह्रस्वार्ध का भी प्रयोग देखा जाता है किन्तु संस्कृत–व्याकरण में ह्रस्वार्ध का प्रयोग नहीं मिलता है । भाष्यकार पतञ्जलि ने भी इसका निषेध किया है ।

ध्वनियों के वर्गीकरण के आधार पर हिन्दी में मुख्य रूप से 6 विभाग देखे जाते हैं -

1. प्रयत्न के आधार पर
2. उच्चारण के आधार पर
3. संयुक्त व असंयुक्त के आधार पर
4. स्थान के आधार पर
5. ह्रस्वता व दीर्घता के आधार पर
6. प्राणत्व के आधार पर

प्रयत्न के आधार पर - ध्वनि को उच्चारित करने के लिये ओष्ठ–ताल्वादिस्थानों का श्वासादि का जो प्रयास होता है उसे प्रयत्न कहते हैं । संस्कृत व्याकरण में पाणिनीयशिक्षा में दो प्रकार के प्रयत्नों का निर्देश किया गया है – **प्रयत्नोऽपि द्विविधः, आन्तरिकं बाह्यश्च**[xvii] । उसी प्रकार हिन्दी व्याकरण में भी दो प्रयत्न बताये हैं – आन्तरिक एवं बाह्य[xviii] ।

बाह्य प्रयत्न के अन्तर्गत स्वरों के उच्चारण के **सानुनासिक** एवं **निरनुनासिक** के भेद से 2 प्रकार के भेद देखे जाते हैं उसी प्रकार संस्कृत में भी इनका श्रवण होता है । बाह्य प्रयत्न के आधार पर ही व्यञ्जन ध्वनियों के भी दो भेद **घोष** एवं **अघोष** उभयत्र समान मिलते हैं ।

आभ्यन्तर प्रयत्न के आधार पर जिस प्रकार से हिन्दी व्याकरण में भेद निर्दिष्ट हैं ठीक उसी प्रकार प्रकार संस्कृत में भी निर्दिष्ट हैं । यथा– **संवृत, अर्धसंवृत, अर्धविवृत विवृत** । अर्धसंवृत एवं अर्धविवृत को ही संस्कृत व्याकरण में ईषत्संवृत एवं ईषत् विवृत कहा जाता है ।

अनुनासिक व्यञ्जन के नाम से हिन्दी व्याकरण में ङ, ञ, ण, न, म जाने जाते हैं । संस्कृत–व्याकरण में **मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः**[xix] इस सूत्र के द्वारा इन्हीं वर्णो की अनुनासिक संज्ञा बतायी गयी है ।

इस प्रकार हिन्दी भाषा का व्याकरण पूर्णतः पाणिनीय व्याकरण से सम्बद्ध है या आधृत है । जिस भाषा का व्याकरण ही पाणिनीय प्रणाली पर आधारित हो तो यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि तत्प्रणाली से हिन्दी भाषा पोषित एवं प्रोन्नति को प्राप्त है । पाणिनीय व्याकरण के जानने के पश्चात् हिंदी भाषा के व्याकरणिक नियमों का जानना अत्यंत सरल हो जाता है।

संदर्भ सूची

[i] पाणिनीयशिक्षा

[ii] पाणिनीयशिक्षा

[iii] वर्णोच्चारणशिक्षा

[iv] अष्टाध्यायी सू.सं. 7.4.62

[v] अष्टाध्यायी सू.सं. 1.3.7

[vi] अष्टाध्यायी सू.सं. 8.2.30

[vii] अष्टाध्यायी सू.सं. 8.4.41

[viii] अष्टाध्यायी सू.सं. 1.1.69

[ix] पाणिनीयशिक्षा 94

[x] पाणिनीयशिक्षा

[xi] पाणिनीयशिक्षा

[xii] पाणिनीयशिक्षा

[xiii] पाणिनीयशिक्षा

[xiv] पाणिनीयशिक्षा

[xv] पा. शि. 92

[xvi] अष्टाध्यायी सू.सं. 1.2.27

[xvii] वर्णोच्चारणशिक्षा

[xviii] हिन्दी भाषा शिक्षण

[xix] अष्टाध्यायी सू.सं. 1.1.8

परिशीलित ग्रन्थ सूची

1. अष्टाध्यायी, आचार्य पाणिनि, रामलाल कपूर ट्रस्ट सोनीपत, हरियाणा ।
2. पाणिनीयधातुपाठः, आचार्य पाणिनि ,रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत, हरियाणा 1985 ।
3. पाणिनीय शिक्षा , आचार्य शिवराज कौन्दिनायन,चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी. उत्तरप्रदेश ।
4. वर्णोच्चारणशिक्षा, दयानन्द सरस्वती , रामलाल कपूर ट्रस्ट सोनीपत, हरियाणा ।
5. संस्कृत एवं संस्कृति, डॉ. राजेंद्र प्रसाद,प्रभात प्रकाशन,दिल्ली ।
6. भाषिकी और संस्कृत भाषा, डॉ. देवीदत्त शर्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़,हरियाणा ।
7. हिंदी भाषा शिक्षण, भाई योगेन्द्र जीत, विनोद पुस्तक मंदिर ,आगरा, उत्तरप्रदेश ।